इकाई 14 यूरोप में सामाजिक वर्ग

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- उन प्रक्रियाओं में अन्तर बता सकेंगे जिनके कारण यूरोप के विभिन्न वर्ग उभरती पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में एकीकृत हुए,
- यह बता सकेंगे कि अलग-अलग देशों में इन प्रक्रियाओं ने अलग रूप धारण किया, और
- यह भी बता सकेंगे कि यूरोप में नए वर्गों के उदय के साथ विभिन्न वर्गों के बीच एक नई राजनैतिक चेतना का जन्म हुआ।

14.1 प्रस्तावना

इकाई 15 में आप आधुनिक वर्ग समाज की ओर संक्रमण के बारे में अध्ययन करेंगे और यह जानेंगे कि किस प्रकार नए प्रकार के उत्पादन के लिए नए प्रकार के कार्य की भी जरूरत होती है। जिस वर्ग समाज की बात हम कर रहे हैं उसका संबंध अनिवार्यत: औद्योगिक समाज से है जिसमें जीवन पद्धति और नैतिक मूल्य पूंजीवादी सरोकारों से परिचालित होते हैं। इस इकाई में हम वर्ग और वर्ग संबंधों के रूपांतरण पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करेंगे। हम रोजमर्रा के जीवन के बदलते ढर्रे पर भी बातचीत करेंगे।

यूरोप के औद्योगिक और गैर-औद्योगिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तन में काफी अन्तर था और सामान्यत: पहले जितना समझा जा रहा था उससे परिवर्तन की रफ्तार कम थी। 1750 ओर 1850 के बीच का समय इस गति और परिवर्तन की दिशा को निर्धारित करने की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण था।

विभिन्न देशों में सामाजिक बदलाव की पद्धति पर भी काफी बहस हुई। इन बहसों का एक पक्ष यह भी था कि क्या यूरोप के विभिन्न देशों में नई वर्ग संरचनाओं के इस उदय का सामान्यीकरण किया जा सकता है। आगे अध्ययन के दौरान हम यह देखेंगे कि सामाजिक वर्गों की प्रकृति के संदर्भ में कुछ हद तक सामान्यीकरण किया जा सकता है। यहां तक कि अलग-अलग औद्योगिक और राजनैतिक संदर्भों में भी सामान्य सूत्र खोजे जा सकते हैं परंतु इसमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि इन समाजों पर जो अनुसंधान किया गया है और पहले जो व्याख्याएं की जा चुकी हैं उनसे भी तुलना करके इसे देखा जाना चाहिए।

14.2 भूमिपतियों और किसानों का पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में विलयन

19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में यूरोप में भू सम्पदा ही धन का सबसे प्रमुख रूप था और भूमिपतियों के पास राजनैतिक ताकत थी। बाद में वे कृषि और उद्योग में उभरते पूंजीवाद में समाहित हो गए तथा उनके वर्चस्व का सामाजिक और आर्थिक आधार बदल गया। वर्ग समाज की ओर संक्रमण नामक इकाई में हम इस पर पहले ही विचार करेंगे। यहां हम जानने का प्रयास करेंगे कि कैसे इस वर्चस्व का उपयोग किया जाता था और पूंजीवादी समाज में नए वर्गों ने अंततः किस प्रकार से चुनौती दी।

14.2.1 इंग्लैंड में भूमिपति वर्ग

इंग्लैंड के भूमिपति वर्गों ने सबसे पहले अपनी अर्थव्यवस्था के आधार को परिवर्तित किया। 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान बढ़ते विदेश व्यापार, लाभदायक कृषि कार्य (भेड़ पालना), खनन, कपड़ा और जहाज निर्माण उद्योगों से होने वाले मुनाफों के कारण अर्थव्यवस्था समृद्ध हुई और विशेषाधिकार वर्गों के धन में वृद्धि हुई। इस व्यवस्था से सर्वाधिक फायदा इंगलिश भूमिपतियों को हुआ इसलिए कृषीय परिवर्तन की प्रकृति और सामान्य तौर पर आर्थिक नीति के निर्धारण में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही और यूरोप के अन्य देशों के मुकाबले आरंभिक पूंजी निवेश में भी इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। औद्योगीकरण से संबंधित इकाइयों में आप इन तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

बदलाव की यह पूरी प्रक्रिया इस प्रकार चली और चलाई गई कि भूमिपति वर्ग का पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सहज और लाभदायक प्रवेश हो जाए। इंग्लिश गृह युद्ध के बाद 'ग्लोरियस रिवोल्यूशन' हुआ जिसमें भूमिपति वर्गों को राजनैतिक विजय प्राप्त हुई और इससे बुर्जुआ समाज को मदद मिली। इसके बाद 18वीं शताब्दी में भूमि की घेराबंदी की गई। ब्रिटिश कुलीनवर्ग के पास बड़ी-बड़ी भूसम्पदाएं थी जिनसे उन्हें किराया मिलता था। इंग्लैंड की लगभग एक चौथाई जमीन इन कुलीन वर्गों के पास थी। धीर-धीरे वे वाणिज्य, नहरों, शहरी भू सम्पदाओं, खननों और कभी-कभी उद्योग में भी पैसा लगाने लगे। इन सब प्रयासों से इंग्लिश कुलीन वर्ग न केवल आसानी से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में ढल गया बल्कि यह कुलीन वर्ग आधुनिक पूंजीपति वर्ग बन गया। भूमिपति कुलीन वर्ग के आधुनिक पूंजीपति के रूप में हुए परिवर्तन के साथ-साथ उच्च वर्ग के सामाजिक गठन में भी परिवर्तन आया जिसमें वे व्यापारिक वर्ग और बुर्जुआ वर्ग भी शामिल हो गए, जिन्होंने भूमि में पूंजी निवेश किया था। इंग्लैंड में उत्तराधिकार और ज्येष्ठाधिकार के कानून ने भूमिपति वर्ग को एक खुला रूप दिया।

इस परिवर्तन और रूपांतरण के कारण राजनैतिक संस्थाएं, पुराने सामाजिक कायदे कानून और मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होने लगे। चुनाव व्यवस्था में भ्रष्टाचार के द्वारा (इसकी चर्चा हम पिछले की इकाइयों में कर चुके हैं) मात्र 400 परिवारों ने हाउस ऑफ कॉमन्स के अधिकांश स्थानों पर कब्जा जमा लिया। इसके अलावा हाउस ऑफ लार्ड्स की राजनीति पर भी उन्हीं का नियंत्रण और कब्जा था। 1671 और 1831 के बीच जानवरों का शिकार करने का वैध अधिकार केवल इंग्लिश भूमिपतियों को ही था। किराए पर जमीन लेनेवालों, धनी व्यापारियों जिनके पास जमीन नहीं थी और गरीब निर्धनों को यह विशेषाधिकार नहीं प्राप्त था। अनाज कानून को समाप्त किए जाने के लिए हुए आंदोलन, चार्टिस्ट आंदोलन तथा 1832, 1866 और 1882 के सुधार अधिनियमों के फलस्वरूप भूमिपतियों का प्रभाव कम होने लगा। वास्तव में केवल 1880 के दशक के बाद ही भूमिपतियों के धन और राजनैतिक प्रभाव में कमी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

14.2.2 फ्रांस में भूमिपति वर्ग

महाद्वीपीय यूरोप में कुलीन वर्गों की स्थिति इस प्रकार की नहीं थी। हालांकि उन्होंने भी 20वीं शताब्दी तक अपना आधिपत्य कायम रखा। फ्रांस में कुलीन वर्ग *नोबेल्स ऑफ सोर्ड (sword)* और *नोबेल्स ऑफ रोब (robe)* में विभाजित थे। पहले प्रकार के परिवारों को यह सम्मान उनकी सैनिक सेवाओं के लिए प्राप्त हुआ था जबकि दूसरे प्रकार के कुलीन वर्ग को प्रशासन में काम करने से पदवी प्राप्त हुई थी इनमें कुछ वे भी थे जिन्होंने यह पदवी खरीदी थी। कुछ कुलीनों को *कोर्ट नोबेलिटी* के नाम से भी जाना जाता था। क्रांति होने तक प्रशासन, चर्च और सेना के सभी बड़े पदों पर इनका एकाधिकार था। इनके और प्रांतों में रहने वाले कुलीनों के बीच काफी अन्तर था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी कुलीन चाहे उनकी जो भी हैसियत रही हो कृषि के वाणिज्यिकरण, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य के विकास और सुव्यवस्थित बुर्जुआ वर्ग के उदय के बावजूद

काफी समय तक सांमती विशेषाधिकारों का उपभोग करते रहे। फ्रांस में कुलीन वर्ग ने भूमि पर नियंत्रण स्थापित कर अपना वर्चस्व स्थापित नहीं किया और न ही आधुनिक तरीके से कृषि का पुनर्गठन कर ऐसा किया। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि अपने पुराने सामंती अधिकारों को फिर से स्थापित कर ही इस बदल रही दुनिया में अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सकता है। अत: जिस समय क्रांति हुई उनके वर्चस्व का आधार नहीं बदला था। यह इंग्लिश या पूर्वी जर्मनी के भूमिपतियों की तुलना में आर्थिक दृष्टि से कमजोर भी था। अत: कम से कम कुछ समय के लिए इसका पहले वाला महत्व समाप्त हो गया; जो पुनर्स्थापना के बाद इसे पुन: हासिल हो गया था। इसके वर्चस्व का आधार और रूप पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूरी तरह ढल न सका। इसी कारण यहां वर्चस्व के अनेक रूप मौजूद थे जो राज दरबार और राज्य की सेवा से जुड़े थे। यह खासतौर पर उस समय हुआ जब राजतंत्र को संविधानवाद के साथ मिला दिया गया था।

14.2.3 पूर्वी यूरोप में भूमिपति वर्ग

पूर्वी यूरोप के भूमिपतियों की प्रकृति और भी जटिल थी। प्रशा में, कृषि के पूंजीवादी रूपातंरण के साथ, जुंकर की स्थिति अधिक मजबूत हो गई; क्योंकि जर्मनी के एकीकरण के बाद वे अधिक निरंकुश राजनैतिक ढांचे से जुड़ गए। पूर्वी जर्मनी की अपेक्षा पश्चिमी क्षेत्रों में भूमिपति वर्ग अधिक लचीला और खुला था और पूंजी अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में इसके विलयन का रूप भी अलग था; परंतु इधर हाल में हुए अनुसंधानों से यह बात स्पष्ट हो गई है कि इस मुद्दे पर जरूरत से ज्यादा बल नहीं दिया जाना चाहिए। पूर्वी क्षेत्र में भूमिपति बड़े पैमाने पर मजदूर रखते थे और उन्हें मजदूरी दिया करते थे जबकि पश्चिमी क्षेत्र में भूमि से प्राप्त राजस्व या किराया ही उनकी आय का प्रमुख स्रोत था। बीसवीं शताब्दी में भी सम्पूर्ण जर्मनी में सेना, नौकरशाही और राजनैतिक संस्थाओं में भूमिपति वर्ग का वर्चस्व कायम था; जबकि इस समय तक इंग्लिश और फ्रांसीसी भूमिपति वर्ग बुर्जुआ वर्ग के सामने घुटने टेक चुके थे। विश्व बाजार से अच्छी तरह जुड़कर जुंकरों ने पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी पकड़ मजबूत की और राज्य नीतियों को प्रभावित कर अपने पक्ष में रख सके; संरक्षणात्मक कर नीतियों ने इसमें उनकी मदद की। मताधिकार के स्वरूप ने भी राष्ट्र और उनके अपने क्षेत्रों में उनके प्रभुत्व को संरक्षित किया।

14.2.4 मध्य यूरोप में भूमिपति वर्ग

मध्य यूरोप के अन्य देशों में भूमिपति सामंती व्यवस्था से जुड़े रहे क्योंकि यहां अभी भी कृषि ही अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार थी। पोलिश और जर्मन भूमिपति अपनी राष्ट्रीय सीमा से बाहर भी स्थित थे। इन क्षेत्रों में वे यथास्थिति बनाए रखने और राष्ट्रवादी आकांक्षाओं के खिलाफ होनेवाली सामाजिक प्रतिक्रिया के प्रमुख रक्षक बन गए। अठारहवीं शताब्दी में रूस में नए कुलीन वर्ग का जन्म हुआ। पीटर द ग्रेट ने कुलीन वर्ग के भीतर राज्य सेवा को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ने के साथ-साथ कृषिदास प्रथा की संस्था को मजबूत किया। इससे सामंती व्यवस्था के वर्चस्व को स्थायित्व प्रदान करना उनके जीवन मरण का प्रश्न बन गया और इसी कारण वे एक हो गए। इस दृष्टि से पश्चिमी यूरोप और जर्मनी से यहां की स्थिति भिन्न थी। 1917 की क्रांति तक भूमिपति वर्ग का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक वर्चस्व कायम रहा। 1861 में हुए कृषीय सुधार भी इस तरह किए गए कि उनके विशेषाधिकारों पर आंच नहीं आई और बड़े राजनैतिक सुधारों पर अंकुश लगाकर भी वे अपना वर्चस्व कायम रखने में सफल रहे। रूस पर लिखी इकाई में आपने इसे विस्तृत रूप से पढ़ा होगा। परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि उनके वर्चस्व में किसी प्रकार का परिवर्तन आया ही नहीं। वे ज्यादा से ज्यादा मजदूर रखने लगे, जमीन का किराया वसूल करने लगे, अधिक प्रत्यक्ष रूप में बाजार से जुड़ने लगे, किसानों से भी उनके संबंध व्यावसायिक हो गए, और भूमि पर उनका विशिष्ट स्वामित्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया। भूमि सम्पदाओं को भंग कर जमीनें किसानों को दे दी गई। यह उन पर अंतिम प्रहार था। इससे उनका सामाजिक और राजनैतिक प्रभुत्व समाप्त हो गया। दूसरे शब्दों में रूस में पूंजीवाद के ध्वस्त होते ही भूमिपति वर्ग का अस्तित्व समाप्त हो गया; द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति तक पूर्वी यूरोप के सिवा और कहीं भी ऐसा नहीं हो सका था। बाकी सारे यूरोप में भूमिपतियों का आधिपत्य भले ही कम हो गया हो परंतु उनका अस्तित्व बना रहा और वे पश्चिमी यूरोपीय समाजों के 'संभ्रांत' या विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग बने रहे।

14.2.5 यूरोप में कृषक वर्ग

जैसा कि पिछली इकाई में बताया जा चुका है 18वीं ओर 19वीं शताब्दियों में कृषि क्षेत्र में परिवर्तन आने से यूरोप में औद्योगिक पूर्व युग का कृषक वर्ग समाप्त हो गया। 40 के दशक तक यानि मशीनीकरण होने तक कृषि में लगे लोगों की कुल संख्या में कोई खास गिरावट नहीं आई तथा किसान और भूमिपति आधुनिक यूरोपीय समाज के अभिन्न अंग बने रहे। कृषक वर्ग की स्थिति और आधुनिक वर्ग समाज में इसके विलयन का निर्धारण भूमि बंदोबस्त की प्रकृति और बाजार की ताकतों यानी इन देशों में पूंजीवाद के विकास के ढंग से हुआ। समुदाय, धर्म और संस्कृति के प्रभावों में बाजार के अनुभवों और भूमि परिवेश का हस्तक्षेप हुआ। भूमिपति के साथ संबंध अभी भी उनके सामाजिक और राजनैतिक अनुभवों का महत्वपूर्ण हिस्सा था। हालांकि यह संबंध ज्यादातर प्रतिकूल और विरोधात्मक होता था परंतु कभी-कभी उद्योग समर्थित नीतियों का विरोध करते समय वे एक हो जाते थे। इससे पता चलता है कि निर्णायक मोड़ों पर वे यथास्थितिवाद का समर्थन करते थे। गांव और शहर दोनों जगह काम करने वाले मजदूरों के लिए शहरों में परिवहन, साक्षरता, राजनैतिक विकास के जरिए उनकी दुनिया में 'बाहरी दुनिया' का तेजी से प्रवेश हुआ । इन सबके परिणामस्वरूप सम्पत्ति, अपराधवृत्ति और राज्य सत्ता की अवधारणा परिवर्तित होने लगी। यूरोप के अधिकांश क्षेत्रों में ग्रामीण इलाकों में पूंजी इकट्ठी होने और आम सामुदायिक अधिकारों के समाप्त होने से कृषक वर्ग के भीतर एक नए ढंग से वर्ग निर्मित हुए।

18वीं शताब्दी में हुई घेराबंदी से एक वर्ग के रूप में इंग्लिश सामाजिक संरचना में एक वर्ग के रूप में भूस्वामियों का अस्तित्व समाप्त हो गया और हालांकि 19वीं शताब्दी में भी कुछ कृषकों के पास भूमि बची थी परंतु यह कहा जा सकता है कि इंग्लैंड में सामाजिक तौर पर कृषक वर्ग का कोई अस्तित्व नहीं रह गया क्योंकि अब कृषि उत्पादन में पूंजीपति खेतिहर और ग्रामीण मजदूर ही प्रमुख हो गए। लगभग पूरे यूरोप में (इंग्लैंड तथा अधिक स्पष्ट रूप में जर्मनी में) पूंजीवाद और आधुनिक वर्ग समाज के विकास के कारण कृषक समाज टूटने लगा और कृषक वर्ग का छोटे बुर्जुआ किसानों से लेकर ग्रामीण सर्वहारा वर्ग तक में विभाजन होने लगा। पूरे यूरोप में कृषक वर्ग के बाजार, जमीन, भूमिपति और स्थानीय राजनैतिक संस्थाओं के साथ संबंध विविध और जटिल थे। इसके सामाजिक दृष्टिकोण और राजनैतिक निष्ठाएं भी जटिल थीं। किसानों के व्यवहार और आधुनिक ग्रामीण समाज में इसके स्थान का निर्धारण मुख्य तौर पर इस बात से होता था कि किसी क्षेत्र विशेष में उस कृषक समुदाय के पास और उस क्षेत्र के भीतर व्यक्तिगत रूप से कृषकों के पास कितनी सम्पदा है। बाजार और पूंजीवाद द्वारा लाए गए बदलाव के अनुसार अपने को बदलने की आवश्यकता से इनकी सामाजिक और राजनैतिक अभिव्यक्तियां निर्धारित हुईं।

फ्रांस में 1789 की क्रांति को सामाजिक समर्थन देनेवाला कृषक वर्ग स्तरीकृत हो गया जिस स ग्रामीण समाज में परस्पर विरोधी हित पैदा हो गए। साथ ही साथ ये क्रांति के बाद बने राजनैतिक ढांचे में भी समाहित हो गए। क्रांति के बाद हुए भूमि बंदोबस्त से उन्हें फायदा हुआ और कृषि के क्षेत्र में नए प्रयासों के कारण राजनैतिक दृष्टि से नेपोलियन युग और पुनर्स्थापना के समय भी एक वर्ग के रूप में इनकी प्रतिष्ठा बनी रही। इसने न तो गणतंत्र को भारी समर्थन दिया और न ही साम्राज्य का विरोध किया। इनके विभिन्न स्तरों में मूल्यों, बाजारों या खद्यान्न की कमियों के कारण ज्यादा तीव्र प्रतिक्रिया हुआ करती थी परंतु विरोध सामाजिक स्तर पर ही बना रहा; यह कभी इस हद तक राजनैतिक न बन सका कि राजनैतिक व्यवस्था को चुनौती दे सके। 20वीं शताब्दी में फ्रांसीसी कृषक वर्ग अधिकांशतः सुधारवादी या मजदूर आंदोलनों से जुड़ने के बजाए रुढ़िवादी समूहों से जुड़े रहे। शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों तथा जनसंचार माध्यमों खासकर अखबारों के जरिए वे राष्ट्र की दृष्टि से फ्रांसीसी बन गए।

जर्मनी में, एल्वे से पूर्व के क्षेत्रों और कृषि प्रधान बैवेरिया में ही नहीं बल्कि रूर और सैक्सोनी जैसे औद्योगिक केंद्रों के आस पास भी जर्मनी के किसान न केवल बचे रहे बल्कि वे समृद्ध भी होते चले गए। बैवेरिया और वेस्टफैलिया पर हुए अध्ययनों से यह पता चलता है कि बड़े किसान (जिनके पास अपने घोड़े थे और जो अपनी जमीन की पैदवार से अपने परिवार का भरण पोषण कर सकते थे) दासों की मुक्ति के बावजूद अपनी पैदावार बढ़ाने में सफल रहे और वे अपने क्षेत्र से बाहर के बाजारों के लिए किए जाने वाले प्रारंभिक औद्योगिक उत्पादन में भी हिस्सा लेते थे। कृषि का वाणिज्यिकरण होने और कृषकों में आपसी वर्ग संघर्ष पनपने से कृषकों की सर्वसामान्यता अथवा सभी कृषक एक समान की अवधारणा समाप्त हो गई। यहां तक कि 1939 में, जर्मनी के तीव्र औद्योगीकरण के पथ पर अग्रसर होने के बावजूद, 25 प्रतिशत लोग कृषि कार्य में लगे हुए

थे। इससे यह पता चलता है कि किसान कृषीय पूंजीवाद के जरिए आधुनिक वर्गीय समाज के अंग बन चुके थे। रूस में भी कृषि के वाणिज्यिकरण और कृषकों के एक वर्ग के सर्वहाराकरण के कारण किसानों के बीच काफी भिन्नता आ गई; कुछ बड़े किसान भी पनपने लगे जो भूमिपतियों के अभिजात वर्ग के खिलाफ थे। कृषि में पूंजीवाद के विकास के साथ इसकी मांगों और प्रतिरोध के तरीके में बदलाव आया और इसकी अपने दुश्मनों के बारे में समझ भी बदल गई। यूरोप में, रूस में, कृषक वर्ग राजनैतिक दृष्टि से सबसे ज्यादा जागरूक था जिसने पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने और समाजवादी शासन कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूस से संबंधित इकाई में आप इसका अध्ययन करेंगे।

यहां हम इस बात पर बल देना चाहते हैं कि यूरोप में पूंजीवाद के विकास के साथ ग्रामीण संघर्ष पूंजी और श्रम के मूलभूत द्विभाजन में समाहित हो गया। इसके बावजूद किसान खेती करते रहे और यूरोपीय समाज में भूमिपति विशेषाधिकार वर्ग बने रहे।

बोध प्रश्न 1

1) 19वीं शताब्दी के इंग्लिश और फ्रांसीसी कुलीन वर्ग के बीच प्रमुख अंतर क्या थे ?

....

....

....

....

....

2) क्या हम कह सकते हैं कि 19वीं शताब्दी में जर्मनी में भूमि पर आधारित वर्ग समाप्त हो गया? कारण बताइए।

....

....

....

....

....

3) फ्रांस में कृषक वर्ग की भूमिका पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

14.3 बुर्जुआ वर्ग

पश्चिम यूरोप में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध को बुर्जुआ वर्ग का युग कह सकते हैं। पूर्वी हिस्सों में हालांकि बुर्जुआ वर्ग अपनी पहचान बना चुका था और समृद्धि पा चुका था परंतु अभी उसका वर्चस्व स्थापित नहीं हो सका था। इंग्लैंड, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, स्वीटजरलैंड, और स्कैंडिनेविया में, जहां औद्योगीकरण पहले और तीव्र गति से हुआ था, यह सफलता स्पष्ट और स्वाभाविक थी। आरंभ में आर्थिक और सामाजिक ढांचे

में धीमी गति से हुए परिवर्तन के कारण जर्मनी और इटली में इसकी गति धीमी थी। रूस, आस्ट्रिया, हंगरी, पोलैंड, और स्पेन में सामंती काश्तकारी और कुछ मामलों में निरंकुश राजनैतिक ढांचों के कारण इसके शक्ति प्राप्त करने और एक वर्ग के रूप में इसके मजबूत होने की प्रक्रिया धीमी और कम प्रभावशाली रही। रूस में ये भूमिपतियों के कुलीन वर्ग को चुनौती देने से पहले ही इन्हें उखाड़ फेंका गया।

पूरे पश्चिम यूरोप में 1850 के दशक के बाद बैंकर, कारखानों के मालिक और खान मालिक अर्थात पूंजीपति बुर्जुआ वर्ग के सबसे धनी और प्रभावशाली हिस्से बन गए। इस वर्ग के प्रभुत्व में आने से वर्ग के रूप में व्यापारियों का महत्व घट गया। वाणिज्यिक बुर्जुआ वर्ग पुराने व्यापारियों जैसे नहीं थे। इसके विविध रूप हो गए। अपने आर्थिक और सामाजिक रिश्तों और आर्थिक गतिविधियों के कारण इसकी अलग-अलग पहचान बनी। औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग छोटी उत्पादन इकाइयों के मालिक या छोटे निजी श्रम पर आधारित उत्पादन संस्थाओं के मालिक की हदों को पार कर गया था जिनका प्रभुत्व और समृद्धि धीरे-धीरे पूंजी जमा करने पर आधारित थी। औद्योगिक और बैंकिंग पूंजी के विलयन, और वित्त, बैंकिंग के समान हित और उत्पादक-संघ और अर्थव्यवस्था में एकाधिकार के परिणामस्वरूप वित्त और बैंकिंग भी उनकी आय के स्रोत में शामिल था। यह भी भूमिपतियों के समान शासकीय वर्ग में शामिल था।

औद्योगिक समृद्धि जैसे-जैसे सामाजिक प्रगति का प्रतीक बनती गई वैसे-वैसे मध्यवर्ग और प्रभावशाली हो गया। पूरे यूरोप में मध्यवर्ग के धनी लोग बड़ी-बड़ी सम्पदाएं खरीदने लगे, अभिजात वर्ग की तरह व्यवहार करने लगे; यहां तक कि भूमि आधारित वर्ग भी शहरी सम्पत्ति में निवेश करने लगे। इस वर्ग ने व्यक्तिवाद, मितव्ययिता, कड़े परिश्रम, प्रतियोगिता, पैसे की शक्ति के इस्तेमाल, परिवार आदि पूंजीवादी मूल्यों को बढ़ावा दिया और पूरे औद्योगिक समाज पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

नौकरशाही, स्वास्थ्य और दवा क्षेत्रों, कानून और व्यवस्था, शिक्षा, प्रकाशन, मुद्रण और बड़े पैमाने पर होने वाले उत्पादन से जुड़ी संरक्षण की नई व्यवस्था के साथ जनसंचार और उद्योग के रूप में संस्कृति के विकास के साथ-साथ बुर्जुआ वर्ग में वेतनभोगी पेशेवर भी शामिल हो गए। जनतंत्रीकरण से बुर्जुआ वर्ग का विस्तार हुआ और एक वर्ग के रूप में बुर्जुआ वर्ग के प्रभुत्व स्थापित होने से असमानता भी पैदा हुई। उच्च और अधिक लाभप्रद पदों पर बुर्जुआ वर्ग के धनी वर्ग और भूमि से अलग हुए भूमिपतियों का वर्चस्व था।

सम्पूर्ण बुर्जुआ वर्ग ने अपने-अपने देशों में शक्ति और महत्व प्राप्त करने के बाद भूमिपतियों और राजतंत्रों से एक आलोचनात्मक दूरी रखी। उनके बीच आपसी मतभेद था परंतु विशेषाधिकार और तानाशाही के खिलाफ वे पूर्णतः एकजुट थे। जब वे शासक वर्ग में शामिल हुए और मजदूरों की ओर से चुनौती दी गई तब भी वे एक वर्ग के रूप में एकजुट रहे। धीरे-धीरे भूमिपतियों का भी बुर्जुआकरण हो गया और 20वीं शताब्दी आते-आते यह एक संयुक्त संभ्रांत वर्ग के सदस्य बन गए। विशिष्ट समय और विशिष्ट क्षेत्रों में इन्होंने अलग-अलग प्रकार के राष्ट्रवाद को जन्म दिया। 20वीं शताब्दी में शिक्षा के प्रचार प्रसार से इस वर्ग में मध्य स्तर पर सामान्य जनों का भी प्रवेश हुआ और पूरे यूरोप तथा रूस में उग्र सुधारवादी राजनीति में इसी वर्ग के लोग आए। इससे सामाजिक प्रजातंत्र और महिला आंदोलनों का जन्म हुआ जिन्होंने यथास्थिति पर प्रश्न चिन्ह लगाया।

ये सारी घटनाएं अलग-अलग समय में घटित हुई। इसकी शुरुआत इंग्लैंड में हुई, इसके बाद फ्रांस, जर्मनी और अन्त में पूर्वी यूरोप में हुआ। जर्मनी और रूस में इस प्रक्रिया की शुरुआत देर से पर तेजी से हुई और यह अपेक्षाकृत ज्यादा सुगठित था। कम समय में गठित होने के कारण औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग में एकरूपता थी और औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग और इस वर्ग के अन्य हिस्सों के बीच कम अन्तर था। यूरोप के पिछड़े क्षेत्रों खासकर पोलैंड, चेक और स्लोवाक क्षेत्रों हंगरी और यहां तक कि रूस में भी पूंजी के मालिक, उद्यमी और प्रबंधक अक्सर विदेशी नागरिक हुआ करते थे; कभी-कभी दूसरे क्षेत्र के जर्मन और यहूदी भी इनमें शामिल होते थे। पूरे यूरोप में बुर्जुआ वर्ग में अलग-अलग धर्म को मानने वाले थे। कोई कैथोलिक था तो कोई गैर कैथोलिक और किसी पर गहरा इवैनजेलिकल प्रभाव था। रूस में भूमिपतियों के एक वर्ग और राजनैतिक दृष्टिकोण से अपने वर्ग से कटे बुर्जुआ वर्ग के लोगों से मिलकर एक बुद्धिजीवी वर्ग का निर्माण हुआ जिन्होंने उसी पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध किया जिनके कारण इसका जन्म और विकास हुआ था।

14.4 निम्न मध्य वर्ग

आधुनिक वर्गीय समाज में निम्न मध्य वर्ग भी प्रमुख रूप से उभरा और इसका एक खास स्वरूप सामने आया। पूंजीवाद के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सेवाओं के विस्तार से उनकी संख्या तेजी से बढ़ी। खुदरा समान बेचने समान का प्रचार करने, समान का वितरण, बैंकिंग और वित्त – इन सभी क्षेत्रों में तेजी से विकास हुआ और इनमें जटिलता भी आई। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन उद्योग क्षेत्र का बड़े पैमाने पर नौकरशाहीकरण हुआ और शिक्षा के प्रसार से शिक्षकों के रूप में अधिकांश महिलाओं की नियुक्ति हुई।

हालांकि निम्न वर्ग कई स्तरों पर बंटा हुआ था। परंतु इसे मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता था – दुकानदारों और छोटे-छोटे व्यापारियों का निम्न बुर्जुआ वर्ग और नौकरी करने वाले नए वेतनभोगी जिसमें अधिकांशत: क्लर्क शामिल थे। इसके अतिरिक्त इस वर्ग में फेरी लगाने वाले, छोटे स्कूल के शिक्षक और दुकान में काम करने वाले सहायक भी शामिल थे। सबसे ज्यादा वृद्धि क्लर्क, समान बेचने वालों, सचिवों और निम्न पदीय नौकरशाहों जैसे तबकों की हुई। ब्रिटेन में 1911 तक कुल वाणिज्यिक क्लर्कों में से 42 प्रतिशत क्लर्क उत्पादन उद्योग में नौकरी करते थे। 1882 से 1907 की अवधि में कुल श्रम शक्ति में वेतन भोगियों का प्रतिशत 7 से बढ़कर 13.1 हो गया। फ्रांस में 1876 में 772,000 लोग नौकरी करते थे और पूरे श्रम बल में इनका हिस्सा 5 प्रतिशत था जो 1911 में बढ़कर 1,869,000 हो गया तथा श्रम बल में उनका प्रतिशत बढ़कर 9.3 हो गया। रूस में भी औद्योगीकरण में हुई तीव्र वृद्धि के कारण उनकी संख्या तेजी से बढ़ी।

इन दोनों समूहों का बाजार के प्रति नजरिया अलग-अलग था। परंतु कुछ मामलों में वे अपने को एक दूसरे के समीप पाते थे। सबसे पहली बात कि वे अपने को मजदूर नहीं मानते थे और वे उनसे दूरी बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करते थे तथा वे इस बात को स्पष्ट करना चाहते थे कि वे मजदूरी नहीं करते। इन दोनों समूहों को जोड़ने वाला दूसरा तथ्य यह था कि बुर्जुआ वर्ग की तुलना में ये दोनों उपेक्षित थे। अन्य समूहों की तुलना में उनकी स्थिति डावांडोल थी। उन्हें सबसे ज्यादा डर इस बात का लगा रहता था कि आर्थिक संतुलन तनिक भी बिगड़ने पर उनकी नौकरी छूट जाएगी और वे वापस अपने मूल मजदूर वर्ग में शामिल हो जाएंगे जिनसे वे हमेशा दूरी बनाए रखने का प्रयत्न करते थे। उनकी नौकरी सुरक्षित नहीं थी और उन्हें बराबर यह डर लगा रहता था कि अर्थव्यवस्था में मंदी आने पर उनकी नौकरी छूट जाएगी।

वे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक थे और निजी सम्पत्ति के जबरदस्त समर्थक थे। सामाजिक सीढ़ी पर ऊपर चढ़ना और बुर्जुआ वर्ग की हैसियत प्राप्त करना उनका लक्ष्य और महत्वाकांक्षा थी। बुर्जुआ सामाजिक व्यवस्था को हटाने या निजी सम्पत्ति के अधिकार को चुनौती देने की मांग उन्होंने कभी नहीं की, हालांकि उन्हें उत्पादन और व्यापार के बढ़ते केंद्रीकरण के परिणामस्वरूप नुकसान उठाना पड़ा और इस प्रतियोगिता में उनको काफी कुछ गंवाना पड़ा। श्रम बाजार में भी उनकी स्थिति डावांडोल थी।

स्थानीय संदर्भ में कार्यरत होने के कारण निम्न मध्य वर्ग समाज में अकेले पड़ गया था और उनमें सामूहिक रूप में समस्याओं को देखने की दृष्टि विकसित न हो सकी बल्कि वे समस्याओं के व्यक्तिगत स्तर पर निदान करने में रुचि रखते थे। अपने काम के दौरान और रोजमर्रा के जीवन में वे मजदूर वर्ग की अपेक्षा ज्यादा बड़े सामाजिक समुदायों के सम्पर्क में भी आते थे। अत: मजदूर वर्ग और बुर्जुआ वर्ग की अपेक्षा उनमें वर्ग चेतना की कमी थी और वे सामूहिक रूप से कोई कार्यवाही करने में असफल रहे। केवल जर्मनी ही इस दृष्टि से अपवाद था। नौकरियों के मामले में रेलवे और डाकघरों में इनका बड़ा विस्तार था और इनका संबंध अवैयक्तिक था जो अपवाद था। यह कुछ हद तक अपनी हैसियत के प्रति जरूरत से ज्यादा सचेत रहने और मजदूर वर्ग से दूरी बनाए रखने का भी परिणाम था।

स्थानीय संदर्भ के कारण वे परिवर्तन को भी सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे और कई अर्थों में राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बुर्जुआ वर्ग की अपेक्षा ज्यादा रूढ़िवादी और संकीर्णवादी थे। ब्रिटेन में समाज के इस हिस्से की स्थिति ज्यादा डावांडोल थी क्योंकि वे राजनैतिक दृष्टि से लामबंदी नहीं कर सकते थे क्योंकि ब्रिटेन की राजनैतिक संरचना ऐसी थी जिसमें एक संसद थी और एक हाउस ऑफ लॉर्ड था। संसद की राजनीति और उसकी नीतियों से ही राजनैतिक परिवर्तन होता था। ब्रिटेन में महाद्वीप के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा व्यक्तिवाद की भावना भी ज्यादा विकसित थी।

14.5 मजदूर वर्ग

पूंजी और श्रम के द्विभाजन से यूरोप के मजदूर वर्गों की प्रकृति निर्धारित हुई। मजदूर वर्गों की बनावट और अनुभव भी बिलकुल अलग-अलग थे। औद्योगीकरण के कारण भूमिपति वर्गों के और धनी मध्य वर्गों के बीच की दीवार भले ही टूट गई हो परंतु इससे मध्य वर्ग और मजदूर वर्ग के बीच का अंतर तीखा हो गया। इसी कारण से अपने संघटन की बहुलता के बावजूद वे एक राजनैतिक और सामाजिक वर्ग के रूप में उभर सके।

शहरी और सामाजिक जीवन से अमीर गरीब का भेद बढ़ गया। वे शहरों में अलग-अलग इकाइयों में रहते थे और उन्हें उपलब्ध सुविधाओं में भी काफी अन्तर था। बिलकुल आज के हमारे देश जैसी स्थिति थी। 19वीं शताब्दी के अन्त तक भवन निर्माण के क्षेत्र में नई तकनीक आने से शहरों के रूप बदलने लगे। पहले औद्योगिक शहरों में धुंआ, भीड़ और गन्दी बस्तियों के सिवा कुछ नहीं होता था अब शहरों में बहुमंजिली इमारतें बनने लगीं। सीवर, फुटपाथ, बिजली की रोशनी, कैफे, किराना की दुकानों, पार्कों, शहरी सड़कों, सम्मेलन कक्ष, सार्वजनिक पुस्तकालय का निर्माण हुआ। इससे शहरों का नक्शा बदल गया। परंतु ये सारी सुविधाएं अमीरों को ही उपलब्ध थीं। मजदूर वर्ग तो भीड़भाड़ में ही रहता था। एक कमरे के घर जिनमें दो या तीन परिवार एक साथ रहते थे, जगह कम होने के कारण लोग बारी-बारी से सोते थे, शौचादि की भी पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी। आने जाने के लिए परिवहन का भी कोई खास इन्तजाम नहीं था और वे हमेशा अपने को असुरक्षित महसूस करते थे। अमीर लोग रेलगाड़ी में चढ़कर घूमने जाते थे और समुद्र के किनारे आरामगृहों में ऐश करते थे। गरीब मजदूर जब रोजी-रोटी की खोज में बाहर निकलता था तभी उसे रेलगाड़ी में चढ़ना नसीब होता था। पूर्ववर्ती सामान्य जन, जो अब विशेषाधिकार भोगी मध्य वर्ग में परिवर्तित हो गए थे। अब वे निम्न वर्ग के मेलों, मुर्गों की लड़ाई, *पब* जैसे मनोरंजन के स्थलों को नीची निगाह से देखते थे।

20वीं शताब्दी के आरंभ तक यूरोप में मजदूर वर्ग काफी स्तरों और हिस्सों में बंटा हुआ था क्योंकि विभिन्न उद्योगों का मशीनीकरण एक साथ और अचानक नहीं हुआ था। शहरों में कुशल कारीगर रहते थे जिन्होंने यह देखा कि उनके निपुणता का स्थान मशीनों ने ले लिया। कुछ ऐसे भी शिल्पी थे जो इस शताब्दी के पूर्वार्ध में फले फूले क्योंकि मशीनीकरण के कारण किसी दूसरे क्षेत्र में उनके उत्पाद की मांग बढ़ गई। औद्योगीकरण के आरंभिक चरणों में बुनाई और कताई प्रक्रियाओं में मशीनीकरण के बीच अलगाव इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। मशीनीकरण के बाद भी कुछ कौशल आधारित व्यापारों का महत्व बना रहा। बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाले उद्योगों के कारण बड़े पैमाने पर अन्य कौशल आधारित रोजगार उत्पन्न हुए। सभी शहरों में कुशल कारीगर, घरेलू नौकर, दर्जी, धोबी, रंगरेज, राज मिस्त्री और भवन निर्माण मजदूर, डाक और तार विभाग में काम करने वाले मजदूर, विभिन्न कामों में लगे रेलकर्मी, खान में काम करने वाले लोग तथा कुशल और अकुशल कारखाना मजदूर एक साथ रहते थे। कारखानों में हुई वृद्धि के कारण भूतपूर्व किसान बड़ी संख्या में मजदूर बने; वे दूसरी और तीसरी पीढ़ी के मजदूर थे। खासतौर पर रूस में किसानों और मजदूरों में गहरा संबंध था और उन्होंने मजदूर वर्ग आंदोलन को उग्रवादी चरित्र देने में काफी मदद की। महिलाओं और बच्चों के मजदूर बनने से मजदूर वर्ग की प्रकृति को एक नया आयाम मिला। उनकी जीवन शैली और मजदूरी में काफी विभिन्नता थी और इसके फलस्वरूप श्रमिक अभिजात वर्ग का जन्म हुआ। 1850 के दशक तक इंग्लैंड में भी श्रम बल में कारखाना मजदूरों की संख्या कम थी; इसके बाद उनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। बाद में हुए औद्योगीकृत देशों में तीव्र गति से औद्योगीकरण हुआ और उसी अनुपात में मजूदरों की संख्या में भी वृद्धि हुई। फ्रांस में लम्बे समय तक कुशल शिल्पियों की मांग ज्यादा दिनों तक बनी रही।

औद्योगिक क्रांति ने नए कारखाना मजदूरों की परम्परागत दुनिया नष्ट कर दी। नया मजदूर अब पूरी तरह नगद मजदूरी पर आश्रित था, उसे नए माहौल में काम करना पड़ रहा था; उसे मशीनों और अनुशासन से बंध कर काम करना पड़ रहा था। काम करने की स्थिति खराब ही नहीं नुकसानदेह भी थी। वे अपने को असुरक्षित महसूस करते थे। बड़े परिवार से अलग होने से वे अपने को अकेला महसूस करने लगे थे। उनका सामाजिक जीवन छोटे ढाबों और चाय पान की दुकानों तक सीमित रह गया था। अकुशल कार्यों के लिए अधिकतर महिलाओं और बच्चों को काम पर रखा जाता था। उनकी स्थिति भी काफी दयनीय थी। उन्हें मजदूरी भी काफी कम दी जाती थी। बेरोजगारी एक भयानक यथार्थ थी।

आरंभिक औद्योगिक विकास का खामियाजा सामान्यत: नए मजदूर वर्ग को उठाना पड़ा। मजदूरों की दयनीय स्थिति और करुण दशा की दिल हिला देने वाली घटनाओं के अनेक उल्लेख मिलते हैं। उन्हें 15-16 घंटे तक (बाद में 12 घंटे तक) काम करना पड़ता था, उनके पर्यवेक्षक उनसे निर्ममता से काम लेते थे, औद्योगीकरण के आरंभिक वर्षों में मजूदरों को यातना के दौर से गुजरना पड़ा। इसके फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में मजदूरों के कई दंगे हुए। बाद में कानून बनने, औद्योगिक अर्थव्यवस्था के विस्तार और उपनिवेशों के साथ असमान आर्थिक सबंधों के परिणामस्वरूप उनकी मजूदरी बढ़ी। मजदूर वर्ग पूंजी और श्रम के द्विभाजन से परिचित हुआ और उन्होंने अपने और अपने नियोक्ताओं के बीच का अन्तर्विरोध जाना जिसके कारण कई प्रकार की वर्गीय अभिव्यक्तियां सामने आईं।

14.6 राजनैतिक चेतना

समाज के अलग-अलग हिस्सों के अलग-अलग वर्ग अनुभवों के कारण वर्ग चेतना का उदय हुआ और यह विभिन्न प्रकार की राजनैतिक सम्बद्धताओं के जरिए अभिव्यक्त हुआ। समस्त यूरोप में भूमिधर वर्गों ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के राजनैतिक संगठनों के जरिए लड़ाई लड़ी; जैसे, जर्मनी में कृषि लीग, इंग्लैंड में हाउस ऑफ लॉर्ड्स, रूस में संयुक्त कुलीन वर्ग आदि। इसके अलावा उन्होंने दक्षिणपंथी नीतियों का समर्थन किया। अपने हितों की जनतांत्रिक संस्थाओं और प्रथाओं के जरिए रक्षा करने के लिए उन्होंने जनतंत्र की कार्य पद्धति से समझौता कर लिया। कृषकों के बारे में आम धारणा यह थी कि वे सबके सब एक समान रूढ़िवादी और संकीर्ण विचारों वाले होते हैं परंतु इस आम धारणा को गलत सिद्ध करते हुए उन्होंन तात्कालिक और स्थानीय कारकों का कड़ा विरोध किया। उनके भी कई संगठन थे। उन्होंने जमीन, शिक्षा और अन्य सुविधाओं की मांग कर अपने हितों को सामने रखा। रूस में भी उन्होंने यही मांग की और वे क्रांतिकारी आंदोलन के अभिन्न अंग बन गए।

बुर्जुआ वर्ग ने आरंभ में विशेषाधिकार और राजतंत्र के खिलाफ आवाज उठाई जो वस्तुत: जनता की ही आवाज थी। इस प्रकार उनकी राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्ति मिली। धीरे-धीरे उन्होंने अपने हितों को आगे बढ़ाना शुरू किया और अपने वर्ग हित में आर्थिक नीतियां बनाईं जो कृषि और भूमिपतियों के खिलाफ थीं। प्रातिनिधिक संस्थाओं पर उन्होंने अपनी पकड़ मजबूत की। हालांकि विचारधारात्मक स्तर पर यह उदारवाद का समर्थक था परंतु मजदूर वर्ग के दबाव को निरस्त करने के लिए उन्होंने मध्यमार्गी तथा दक्षिणपंथी दलों को समर्थन दिया। राज्य और राजनैतिक संरचना से संबंधित अध्ययन में आप इसके बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

मजदूर वर्ग ने पहली बार पूंजीवादी व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने रोटी के लिए दंगे किए, मशीनें तोड़ीं और संगठित प्रतिरोध किया जिसने महत्वपूर्ण राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया। मजदूर कभी-कभी अपने आस पास के माहौल से तंग आकर उबल पड़ते थे। कई बार उनका प्रतिरोध सामान्य क्रांतिकारी सामाजिक असंतोष का हिस्सा होता था और वे राजनैतिक संरचना और राज्य के स्वरूप में बदलाव चाहते थे। उन्होंने मजदूर संघ बनाए और 20वीं शताब्दी में मजदूर संघ आंदोलन का तेजी से विकास हुआ। समाजवादी विचारों के विकास के साथ-साथ मजदूर आंदोलन सामाजिक प्रजातंत्र से जुड़ गया और इसने सामाजिक जनतांत्रिक दलों को समर्थन दिया। रूस में मजदूर वर्ग ने पूंजीवादी व्यवस्था को अपदस्थ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बोध प्रश्न 2

1) बुर्जुआ वर्ग से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

2) नौकरी पेशा वेतनभोगी कर्मचारियों और दुकानदार तथा व्यापारी जैसे छोटे बुर्जुआ के बीच सोच के स्तर पर क्या समानताएं थीं ?

....

....

....

....

....

3) क्या हम कह सकते हैं कि यूरोप में मजदूर वर्ग के बीच कोई स्तरीय भेद नहीं था ? कारण दीजिए।

....

....

....

....

....

4) वर्ग अनुभव वर्ग चेतना के रूप में किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ ?

....

....

....

....

....

14.7 सारांश

इस इकाई में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है:

- किस प्रकार यूरोप में पूंजीवाद के उदय के साथ भूमिपति और किसान विभिन्न तरीकों से नई अर्थव्यवस्था में ढल गए,
- किस प्रकार कुछ देशों में भूमिधर वर्गों के हित समाज और अर्थव्यवस्था का स्वरूप निर्धारित करते रहे,
- किस प्रकार कुछ देशों में इन भूमिधरों के हितों के वर्चस्व के कारण बुर्जुआ वर्ग की स्वतंत्र अस्मिता या पहचान नहीं बन सकी,
- किस प्रकार नए उभरते वर्गों को नई चेतना से युक्त होने के लिए राजनैतिक स्तर पर लड़ाई लड़नी पड़ी।

14.8 शब्दावली

जुंकर : जर्मनी के बड़े भूमिपति जो औद्योगीकृत जर्मनी में भी शक्तिशाली बने रहे।

योमैन : ब्रिटेन के छोटे भूस्वामी जो वाणिज्यिकरण और घेराबंदी के कारण खेती से बाहर हो गए।

मशीनीकरण : औद्योगिक और कृषीय अर्थव्यवस्थाओं के संचालन में तकनीकी प्रयोग की प्रक्रिया

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 14.2.1 और 14.2.2। आप इसमें बता सकते हैं कि किस प्रकार फ्रांसीसी कुलीन वर्ग का प्रभाव मौजूद था।

2) देखिए उपभाग 14.2.3। नहीं, वे लुप्त नहीं हुए थे। असल में वे और ताकतवर बन गए थे।

3) देखिए उपभाग 14.2.5। आप इसमें रूढ़िवादी और सुधारवादी दोनों भूमिकाओं की चर्चा कर सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 14.3। इसमें आप नव उदित औद्योगिक वर्गों और भूमिधरों से इसकी आलोचनात्मक दूरी की चर्चा की सकते हैं।

2) देखिए भाग 14.4। आप बताइए कि किस प्रकार उन्होंने बुर्जुआ वर्ग और मजदूर वर्ग से अपनी विशिष्टता बना रखी थी।

3) देखिए भाग 14.5। मशीनीकरण के धीमे प्रयोग की चर्चा की जा सकती है।

4) देखिए भाग 14.6